241 P
826
H
Microfilm

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI.

1943
1021

Call No. 826·H

Accession No.

GIPNLK—7/DAND—5-9-60—15,000

891.051
SW 245

ॐ

IMPERIAL RECORD
RECEIVED
30 MAR 1931
DEPARTMENT

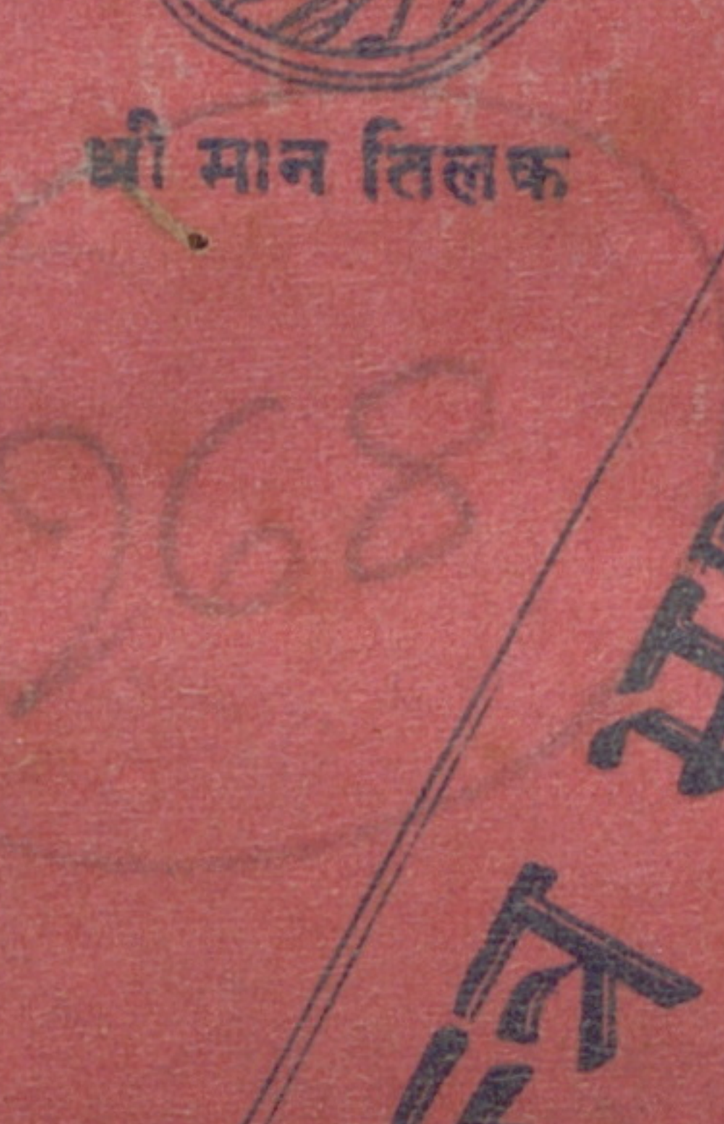

स्वतन्त्र भारत झण्डा

श्री मान तिलक

LALA
AJPATRA.

प्रकाशकः—

मिट्ठनलाल अग्रवाल

कांग्रेस कमेटी पुरवा

ब्रिटिशराज्य कालकी कहानी

ओ३म्

स्वतन्त्र आल्हा

प्रकाशकः—

बाबू मिट्ठन लाल अग्रवाल,

कांग्रेस कमेटी मौंत पुरवा उन्नाव

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 826
Date 22-12-71
GOVT. OF INDIA

* ओ३म् *

* स्वतन्त्र आल्हा *

ओ३म्कार की बिनती करता जो है सकल सृष्टि आधार ।
सुर मुनि जाको ध्यान लगावें महिमा जाकी अपरम्पार ॥
निराकार जगदीश अजन्मा महादेव शृष्टी करतार ।
कर्म्मों का फल देने वाला जीव प्रकृति का है सरदार ॥
अब कहें हकीक़त आर्य्यवर्त की सुनलो भरत खन्ड के भाय ।
जो इतिहास हमारे कहते उसको हम दें गाय सुनाय ॥
जगत गुरू याँके थे ब्राह्मण क्षत्री चक्रवर्ति कहलाय ।
पारस मणि थी भूमि देश की कथन करे सब देय बताय ॥
महभारत से चक्रवर्ति गई प्रथवी राज से राज्य खिलाय ।
ऊंचे थे सो नीचे होगये काल चक्र सों कहा बसाय ॥
नाना दुःख देश ने पायो अधरम फैल रहा संसार ।
यवन काल में धर्म नशाये उसके कथन में हैं लाचार ॥
कोटिन भाई मुस्लिम होगये जो भारत में रहे दिखाय ।
आघात धर्म पर बहुत होगये जा इतिहास ने दिया बताय ॥
पर बहुतक राजा यवन राज्य में न्यायी दयावान कहलाय ।
यवन यहाँके खुद बासी भे दौलत यहां की यहाँ दिखाय ॥

परजा की वह रक्षा करते राज्य धर्म के जानन हार ।
धनसे भरा पुरा भारत था हिन्दुन मन्त्री तक अधिकार ॥
सस्त्र छीन औरत नहीं कीन्हा ना अन्याय के नियम चलाय ।
परजा का धन परजा हित था नाहीं दुकन्दारी दिखलाय ॥
नाहीं इतनी मालगुजारी नाहीं टिकसों की भरमार ।
नाहीं बस्तु बिदेशी आवे नाहीं धन बिदेश को जाय ॥
तिलहन अन्न रुई लोहा भी नाहीं बाहर को थे जाय ।
सुबरनमय अरु अन्नपूर्णा ऐसी भारत भूमि कहाय ॥
बनकर कपड़ा और बस्तुएं यां से देशान्तर को जांय ।
जिसके लाभ में भारत बासी अर्बों रुपया वहांसे लांय ॥
परअबनी यांकुछ और होनथा यहांपर हुआ अशान्ति का जोर।
सिक्ख मरहठा और मुस्लिम में होने लगे युद्ध घनघोर ॥
जिसका फल यह हुआ देश में कूदि फिरंगी पहुंचे आय ।
भाइन २ द्वेष बढ़ाकर अपनी सक्ता तिहिनि बढाय ॥
अस्त्र शस्त्र वह छीन लेगये हमको औरत दिहियो बनाय ॥
कला कौशल को नष्ट करदिया अपनी लीला दियोफै लाय ।
कर किये जारी कर्घे तोड़े अपना बनिज दियो फैलाय ॥
नाना बिधि से दौलत लूटी अत्याचार दियो फैलाय ।

ब्रिटिश राज्य काल

धनि २ रानी विक्टोरिया को अपनी आज्ञा कियो प्रचार।
भारत बासी पुत्र हमारे करिहैं यकसां हम व्योहार॥
लाभ उठाना नहिं इच्छा है गड़बड़ हम सब दिहैं मिटाय।
शान्ति भये फिर राज्यको दें'गे तब तक बली रहें'गे भाय॥
दियो दिलासा आंसू पोंछियो दिल में ढाढस दियो बंधाय।
पुत्र चिरंजीव पोते उनके उनके बचन दियो दुहराय॥
देश शान्ती भारत होगई मिट गयो देश से अत्याचार।
गाँव २ में खुले मदरसे कीन्हियो विद्या का प्रचार॥
औषधालय पोस्ट आदि से परजा बहुत खुशी होजाय।
सड़के बनिगईं भरत खन्ड में आंखे मून्दि चला सब जाय॥
रेल तार न्यालय हुए जारी अब तो युग ही नया दिखाय।
कांगरेस आदि सभा हुईं जारी परजा के जो कष्ट सुनाय॥
पर खींच विदेशी धन को लेगये तरह २ की युक्ति चलाय।
कला कौशल सब नष्ट कराये सबको मुफ़लिस दियो बनाय॥
हीरा मोती सोना चांदी पहुंचेव सात समुन्दर पार
खाने को भी अन्न न रहता भारत हा हा कार पुकार॥
राज्य काज में अनहित अपना इससे हम करते फिर्याद।
पुत्र पिता से हरदम मागे नहीं यह राज द्रोह बकवाद॥
होन हार हम पुत्र पिता के करि हैं अपना शुभ सब कार।

अब नहीं चली हमारे रहियें हम पर हुकम चलाने हार ॥
पिता का नौकर कोई होवे पुत्र का नौकर भी कहलाय ।
प्रजा के नौकर नौकरशाही कहता न्याय हमें बतलाय ॥
नौकरशाही के हम स्वामी हम पर करते अत्याचार ।
यह अन्याय न सहते बनता उनके बचन बिगोड़न हार ॥
क्यों हम थोड़ा वेतन पावें पावें विदेशी बे सुमार ।
हम थोड़े अधिकारी क्यों हैं भारत भूमी मातु हमार ॥
अस्त्र शस्त्र हम क्यों नहीं पावें जबसब दुनियां रही संभार ।
जान माल की रक्षा कारण बेदों ने दीन्हा अधिकार ।
ऊंचे पदे क्यों हम नहीं पावें महारानी जो कहियो पुकार ॥
भारत का धन भारत कोहै चहिए प्रबन्ध भारतियन कयार ।
भारत सम इन्गलैन्ड देश है फिर क्यों इकसाँ नहि व्योहार ।
हम मूरख विद्वान वहां के ऐसा विद्या का परचार ।
ऊंची विद्या और परीक्षा क्यों नहीं होती भारत भाय ॥
इसका कारण नहीं बतलावें यह तो कूट नीति दिखलाय ।
यहाँ पर सौ में पुरुष पढ़े छः औरत एक पढ़ी कहलाय ॥
और देश सब पढ़ैं पढ़ावैं मुफ्त जबरिया नियम चलाय ।
नौ पाई हर मनुष्यकी आमद पौत्रिक धन सबहिया गंवाय ॥
जेवर भूषण की नाहीं भई भारत हाय हाय चिल्लाय ।
घी और दूध की नाहीं होनई बल वीरज जो देय बढ़ाय ॥
नाना रोग देश रहे छाये आयू घटी भारतीयन भाय ॥

पशु धन नष्ट होत हैं नित दिन जो बल कृषी बढ़ावन हार।
नाहक उन पर चले कसारी बूचड़ खाना वे शुम्मार ॥
सौ में पचासो कृषक देश में उनका हाल देउं बतलाय।
सह कुटुम्ब यह परिश्रम करते रोटी पेट भरी नहीं पाय ॥
फडुआ बैल के संग में लड़ते जाड़ा गर्मी और बर्सात।
एक वस्त्र से हरिऋतु झेलें जाड़ा तापि गुजारे रात ॥
माल गुजारी टेक्स बढ़न से जमींदार दियो पोत बढ़ाय।
पोत बढ़न से सबकुछ महंगा परजा हाय २ बिल्लाय ॥
बनिज और व्यापार लिया सब हमको कुली बनायो आय।
कुत्तें से कम कदर कर रहे यह है कर्मों का फल भाय ॥
देश उजारन के कारन से अंगरेजन दियो रेल चलाय।
नक़ली चीजें घर २ तोपियो उम्दा बस्तु विलायत जाय ॥
गल्ला तिलहन और बस्तुयें यांसे देशान्तर भिजवाय।
दैवी गति और नहर कमी से झूरा बार २ दिखलाय ॥
सभ्य देश के यहाँ मुक़ाबिल चौगुन रेलों का बिस्तार।
जल और थल के मार्ग उजड़ गये रेल जहाजन के परचार ॥
दूना पानी देश में बरसे जितना खेती को दरकार।
पानी रोकन के कुबन्ध से झूरा सदा रहे तय्यार ॥
यहां फिरंगी कूरनीति से गाड़ी नाव को बन्द कराय।
भारत का लेलियो बनिज सब भारत की प्रभुता को पाय ॥
नौकर शाही जुल्म देखकर परजा बहुत रही घबड़ाय।

बंग भंग ने आनि जगायो नश्तर करजन दियो लगाय ॥
भारत देश सचेता होगया घर २ हुआ स्वदेशी राग ।
राज्यद्रोही बनी युवक मन्डली घर २ बम्ब बनन फिर लाग ।
वही समय्या वही औसर पर दादा भाई पहुंचे आय ।
प्राण बचाये नौ युवकों के दीन्ही युक्ती नेक बताय ॥
होमरूल सब मिलकर मांगो तुम्हरे कष्ट दूरि होजांय ।
मनो कामना पूरी होई हैं बिगड़े कार्य सिद्ध होजांय ॥
अनहित देख बिदेशी अपना हमको दियो कोर्ट पहुंचाय ।
पर धन्य न्याय को है परशंशा पाला रहयो स्वदेशिन जाय ॥
एक युक्ति यह नई निकाली उसको भी सुनिये चित लाय ।
सबका उत्तर उन्होने पाया नये २ करने लगे उपाय ॥
बाबू सब कांग्रेस बोले हिन्दू मुस्लिम में नहीं मेल ।
या ते नहिं स्वराज्य अधिकारी ऐसा बोलन लागे बोल ॥
हिन्दू मुस्लिम दोनों मिलगये काँगरेस लाखों पहुंचे जाय ।
शत्रुन दल में गड़ बड़ मच गई अब क्या करिये और उपाय ॥
गून्ज स्वराज्य की भारत फैली घर २ चरचा होने लाग ।
बज्र पात सम गिरयो शत्रु पर उनके दिल में लागी आग ॥
देश शत्रु खुदगर्ज स्वदेशी अपने दल में लिये मिलाय ।
जो यह दस्तखत करके भेजैं हमको नहिं स्वराज्य की चोय ॥

उन पर बल हम राजी होंगे दिल में ईंम फूल फलाय।
कारज हमरा सभी सिद्धि हो बिगड़ी बात सभी बन जाय॥
पर बाढ़ तेज़ दरया की कबलौं तिनका रोक सकेगा यार।
शत्रु सघन भी दल बल लेकर बहि गये सात समुन्दर पार॥
नौकर शाही ने फिर मिलकर एक नई चाल निकाली भाय।
इसको भी अब आगे समझो जा इन युक्ती दियो फैलाय॥
होमरूल इस समय न मांगो यह है समय लड़ाई क्यार।
अब नहीं मांगो तुम स्वराज्य को पीछे मगना मेरे यार॥
चाल में आगये कुछ तो अगुआ हां में हां जो मिलावन लाग।
पर बुद्धिमान यह चाल पुकारें भारत सोवसमझतू जाग॥
यहां की बातें यहिने रहगईं अब आयलैंड का सुनो हवाल।
आयरिश परजा ने जो कीन्हियो उसका भी सुनओ अहवाल॥
वही समय्या वही औसर पर आयरिश परजाशोरमचाय।
हमको जल्द स्वराज्यहि देदो वरना खैर नहींहै भाय॥
यहाँ दिलासा वहां निपटारा यह क्या बात नई दिखलाय।
होश सम्हाला चाल बिचारा अब रहा और रंग लखाय॥
मातृ भूमि को बन्धन करके अपने इष्ट मनाने लाग।
भारत कोस्वराज्यभी चहिये जब आयरिशभी मांगन लाग॥
कमर को कसकर कार्य्य क्षेत्रमें बहुतक कूदि भये तय्यार।
दो स्वराज्य हम योग्य हो गये यह रहे भारत शोर पुकार॥
होम रूल की शेरनाद जब वह पहुँची है इंगलिस्तान।

मानटूगो उठ खड़े हो गये कीन्हा भारत का प्रस्थान ॥
मानटूगो शहरों में जाजा सबसे खूब मिलाये हाथ।
भारत से इंगलेन्ड जान में लीन्हियो चैम्स फोर्ड को साथ ॥
सब ने मिलकर गुप्त सोचो महराजा से किया सलाह।
भारत को कुछ देना चहिये जिससे सबका हो निर्वाह ॥
बादशाह ने किरपा कीन्ही हमको कुछ देदियो स्वराज्य।
और कहा फिर आगे देंगे जब तुम अच्छा करिहो काज ॥
विकालयुद्ध यूरप के मौका भारत काठिन चन्दादिया कराय।
अरबों रुपया कर्जा दीन्हियो अपना सरबस दियो लगाय ॥
लाखों ज्वान कटे भारत के जिनकी ललना रहिं बिलखाय।
उनके जियरा को समझावे जिनके ज्वान कन्थ कटिजांय ॥
मात पिता गुरु भाई रोवें खून के आंसू रहे बहाय।
तनमन धन सब अर्पण करदियोराजाहितदियोप्राणलगाय ॥
जीति ब्रटिस की भई जगत में दुश्मन हारि मानि रहिजाय।
पर भारत को लाभ हुआ क्या जिसको पाय खुशी होजाय ॥
संसार स्वतन्त्र सुख भोगन को ब्रटिश लड़ा युद्धमें जाय।
क्यों स्वराज्य भारत नहि पावे तनमन धन जोदिया लगाय ॥
उलटा रौलेट एक्ट पासकर बोलती भारत बन्द कराय।
हाहा कार देश पर छायो कैसा बदला मिल्यो यह आय ॥
रौलेट एक्ट रद्द होने को परजा बहुत रही चिल्लाय।
डायर ओ डायर ने मिलकर अमृत में दियो गोली चलाय ॥
बाल वृद्ध कोई युवा न छोड़ियो नादिर शाही दियो मचाय।

हाय २ कर मरे स्वदेशी भारत हित दियो प्राण गंवाय ॥
रैंन चक्षा छोड़े लगवाये जबरन करवाये प्रणाम।
शक्ति हीन भारत परजा का कैसा करवाया अपमान ॥
हा, न्यायदंड क्या इन्होंने पोया पिन्शन घर में रहे यह पाय ।
भारत का धन फिर भी खावें चैन कि बन्शी रहे बजाय ॥
हाय विधाता गज़ब गुसाइयां किसकी शरण नाथ सब जाय ।
को दुख मेटन हार हमारा अबतो तुमहो में चित लाय ॥
जब २ विपति परी भारत पर तब २ तुमही भये सहाय ।
घोर दुःख में भारत बासी उनको डूबत लियो बचाय ॥
श्राहि माम सब शरण तिहारी नाहक चली प्रजा पर वार ।
कर्मों का फल शत्रु पावें बिनती यही है बारम्बार ॥
एक दुःख यह नहिं भूलाथा दूसर गिरी स्वर्ग से गाज ।
भारत माता का वह प्यारा सबके सर का था जो ताज ॥
ज्ञान प्राप्तकरि ज्ञान प्रकाशा तन मन धन सब दियो लगाय।
रात दिना उपदेश धर्म कर भारत बासिन दियो जगाय ॥
राज्य नीति का आदि गुरु वह भारत छोड़ चला महराज ।
ईश्वर उसको जल्दी भेजो भारत का हो रहा अकाज ॥
भारत नय्या छोड़ बीच में चल दिया प्रभू के दर्बार ।
अब किस पर आशा करें प्रभू जो तुमही पार लगावन हार ॥
घर २ शोक मातमी छायो भारत हाय २ चिल्लाय।
स्त्री पुरुष बाल सब रोवें ऊंची छोड़ २ डिन्डकार ॥
को हमरे हित दुःख उठै है को कारागार होय तय्यार ।

सिंह समान देशको गर्जी अपने स्वार्थ को लातनमार ।
को रक्षा भारत की करि है अपने ऊपर दुःख उठाय ॥
भारत का मिटगया तिलक प्रभु मोहनजी को लेव बचाय ।
हम सबको बल बुद्धि ज्ञानदो नाको तिलक करो स्वीकार ॥
शत्रुन से जो बदला लेवें इज्जत भारत की न बंजार ।
असहयोग का अस्त्र देगया जो अब गांधी रहे फरमाय ॥
स्त्री पुरुष बड़ा अरु छोटा रंग स्वराज्य में रंग जाये आय ।
असहयोग है मन्त्र जुदाई जो गांधी का था प्रस्ताव ॥
कॉंगरेस सभा पास करदीन्हों सबने कीन्हियो है यह भाव ।
सरकारी नौकरियां छोड़ो वापस करो खिताब जो पाव ॥
मेम्बर कौन्सिल के ना हूजो कालिज मदरसा लेव बनाय ।
पंचायत स्थापन कीजियो करदो कोरटों का तिरस्कार ॥
सब कोई चीज विदेशी छोड़ो धारन करो स्वदेशी यार ।
आनरेरी मजिस्टेटी छोड़ो परस्वार्थ में निज स्वार्थ बहाय ॥
भारत के नर नारी मिलके देव स्वराज्य का फाग मचाय ।
अंगरेजों से करो जुदाई अपने कारज लेव बनाय ॥
निज के बन्क कार्य्य सब खोलो जनता का बल देव दिखाय ।
जिससे सायं प्रातः जपियो लाला ने दियो युक्ति बताय ।
हिन्दू मुस्लिम का यह कलमा अगुवा सबके रहे समझाय ॥
जिस स्वराज्यहित फांसी चढ़गये कहकर भारत मातप्रणाम ।
जेल सिधारे बहुत यहां के जिनके अखबारों में नाम ॥
देश निकाला बहुत हो गये परदेशों में धुनी रमाय ।

तप कुटियां सब जेलै हो गई कोई शर्म करे ना जाय ॥
लाखों वीर मुसीबत झेलीं पर स्वार्थ में जान लगाय ।
प्राण पखेरू उड़े बहुत के अमृत वह स्वराज्य नहि पाय ॥
अभी तपस्या और मेहनत में कुछ है कमी गौर बतलाय ।
अयोग्य विदेशी तुमको कहते तरह तरह की युक्ति बताय ॥
दुसरे देसों के इतहासन भाई खूब पढ़ो चितलाय ।
उन स्वराज्य था कैसे पाया मारग वही पकड़ लो आय ।
असहयोग था अस्त्र अपूरब जो गांधी ने बतायो आय ।
ऊधम कर दिये कुछ लोगोंने मारकाट भी कियो मिलाय ॥
चोरी चारा गड़बड़ कर दियो जो नहिं गांधी के मन भाय ।
इसी के कारन गांधीजी ने शोक किया और कहा समुझाय ॥
अधरम हमरे कार्य में हो गया अब नहिं आगे चलि हैं भाय ।
असहयोग हुआ बंद देश में अगुवा कौंसल पहुँचे जाय ॥
इस के जरिये कार्य देश का हम सब करि हैं मन चितलाय ।
अङ्गरेजों की कूटि नीति से कार्य्य न पडता नेक दिखाय ॥
बड़े लाट ने अपने बल पर पर्जा के हित खाक मिलाय ।
साइमनजी ने दल बल लेकर भान मती का खेल दिखाय ॥
देश ने कह दिया लौटो साइमन तुम्हारी जाँच नहीं मन भाय ।
लाहौर शहर के इस झगड़े में सांडर्स दुष्ट ने कियो प्रहार ॥
लाला जी के चोट कलेजा अजहद पहुंच गई मेरे यार ।
पञ्जाब केशरी रण में जूझियो जग में मच गयो हाहाकार ॥
भारत के नर नारी कोपे ऊंची छोड़ छोड़ हुंकार ॥

पन्जाब केशरी कहां सिधारे जो पति लाज बचावन हार ॥
लेव दुबारा जन्म देश में परमेश्वर की आज्ञा पाय ।
दैत्यों का कर देव नाश फिर देशजनो को लेव बचाय ॥
अगुआ देश के ऐसे जूझैं भारत सहे कलेजे चोट ।
धर्म न्याय हमदर्दी उठ गई कर्म होगये ऐसे खोट ॥
सान्डर्स स्वर्ग सिधारा वह भी अपने कर्मों का फल पाय ।
डायर औ डायर सज़ा क्या पायी जो हम देवैं गाय सुनाय ॥
देश द्रोही खुद गर्ज़ स्वदेशी सायमन के ढिग पहुँचे जाय ।
दे बयान दिल में खुश होवें मानो स्वर्ग की गद्दी पाय ॥
शर्म न आवे बेशर्मों को सायमन जांच पड़ी चित खाय ।
जैसे अगुआ पहिले कहते वैसा फल अब दिया दिखाय ॥
स्वार्थ जहां न्याय क्या होगा राउन्डटेबुल में मेरे भाय ।
आज़ादी या मौत ठान लो लो स्वराज्य या मोक्ष को पाय ॥
लाला जी के चिता की ज्वाला भारत देश फैल गई जाय ।
आज़ादी की उठी अवाज़ें कांगरेससे भी पास कराय ॥
फिर श्री गांधी ने बिनती कर ग्यारह शर्तें हमारी लो मान ।
तबभी हम कुछ मान लेंयगे सरकारने कीन्हा कुछ नहिं ध्यान ॥
नशा करो दो बन्द देश से नमक का करतु महसूल उठाय ।
आधी करदो मालगुज़ारी जमा खर्च हम देंय मिलाय ॥
ऊंचे वेतन आधे करदो फौज का खर्चा देव घटाय
भारत सिक्का करो बराबर जहाज़ बनिज में देव अख्त्यार ।
अस्त्र शस्त्र हम रखने पावें जो सब दुनिया रही सभांर ।

राज द्रोह की सज़ा उठादो खुफिया पुलिस को देव हटाय ॥
वस्त्रबिदेशी कर हो चौगुन देशी वस्तु का करो प्रचार ।
मुफलिस देश धनी होजावे कहंतक तुम्हरे हो सरकार ॥
रिगुलेसन अट्ठारह रोको हमरे कैदिन देव छुड़ाय ।
कुछ परवाह न कीन्हयो ब्रटिश तब गांधीजी दे ललकार ॥
जैसे कृष्ण चन्द्र के समुझाये कौरव कुल नहिं दीन्हा बार ।
स्वतन्त्रता का युद्ध छिड़गया कूदि पड़े कोटिन नर नारि
दुर्गा बनकर देवी कूदीं अभिमन्यु सम बालक सरदार ।
देवासुर संग्राम छिड़गया अब ध्यान प्रभू पर चित्त जमाय ॥
एक ओर सत्याग्राही निहत्ते सन्मुख फौज पुलिस दिखलाय ।
निहत्ता के हथियार प्रभूजी तुम्हीं मददगार कहलाय ॥
गोली बरसे प्रजा के ऊपर जेल करें डंडे लगवाय ।
भारत आरत बिलख रहा है महादेव दो बिजय दिखाय ॥
अन्यायी आर्डर हों जारी प्रजा न माने मन चित लाय ।
धर्म अधर्म की होय लड़ाई धर्म की जीत पड़ै दिखलाय ॥
अगुआ देश हितैशी जितने नौकरशाही दियो कैद कराय ।
अबला बालक भी दुख झेलें कितने स्वर्ग सिधारे जाय ॥
कहीं डंडे अरु कोड़े बरसें घोड़ों से भी दिया कुचलाय ।
गोली बरसे प्रजा के ऊपर हाहाकार रहा जग छाय ॥
अंगरेजों का यही न्याय है दुनिया देखे भारत आय ।
भारत वासी दुखड़ा झेलें गोरे मौजें रहे उड़ाय ॥

यह अन्धेर कहां तक होगा दुख भंजन प्रभु करो सहाय।
अब करें वन्दना परमेश्वरको दोऊ करजोर करें परनाम ॥
जो संकट में होय सहायक प्राता सायं जपो हरिनाम।
दुष्टन को संहार करेगा सबकी लाज बचावन हार ॥
दुखी जनों की हरदम सुनता उनको विजय दिलावनहार।
अब कुछ कर बाते हम बतलावें सज्जन सुनियो कानलगाय॥
ध्यान धरनसे सब कुछ जानो नहिं कुछ कहता उसे बढ़ाय।
भारत वासी जितने यां पर है दुनियामें पाँच में एक॥
भारत चीन मिलाकर आधे बोधधर्ममें जो हैं नेक।
दुनियां में जिस कदर देश हैं आबादी का सुनो बयान॥
लाखोंगिनती बहुत जगह की दशबारह का कोटि बखानि।
चीन पैंतालिस भारत इकतिस रूसपन्द्रह कोटि प्रमान॥
बाकी सात करोड़ के अन्दर सज्जन सब लें दिलमें ठानि।
ग्रेट ब्रटन अंगरेज जहां के साढ़े चार करोड़ बखानि॥
आबादी में भारत दूजा आजादी में नीच समान।
आबादी दुनियाका सज्जन कुछ वृत्तान्त सुन्या चितलाय॥
भारतका अबहाल जानलो शंका सब का फिर मिटजाय।
सात करोड़ मुसलमाँ यांपर हिन्दू बाइस कोटि बखानि॥
साठ लाख ईसाई देशी दो लाख के भीतर अंग्रेज प्रमान।
सब मुल्कों के चैन उड़ावें भारत रोटी का मुहताज॥
बल बुद्धी से काम न लोगे कैसे बनिहैं तुम्हरे काज।
देश जाति की रक्षा कारण तनमन धन सबदेव लगाय॥

ऋषी संतान का गौरव राखो भारत इज्जत लेव बचाय ।
हिन्दू मुसलिम अरु ईसाई भारत माता सब लो जानि ।
यही पाली हम सबको है भारत हित सब दीजो प्राण ॥
फिर सब मिलकर मौज उड़ैहो नाती पोतो का कल्यान ।
नाहीं कायर निर उतसाही दुनिया कहिहै तुम्हैं बखानि ॥
भारत में पानी नहीं बरसे भूरा किसको नहीं सताय ।
महंगी वस्तुन के होने से किसको दुखदाई नहिं भाय ॥
भारत हितमें सबका हित है भारत दुख में दुःख महान ।
सब मिल दुखः मिटाओ इसके जो चहरे अपना कल्यान ॥
भिखमंगों को राज्य न मिलता चाहे कितनाकरें उपाय ।
योग्य तपस्वी को सब मिलता मन बुद्धी जो देय लगाय ॥
सुख सम्पति जो करे निछावर काम पड़े जो जानलगाय ।
फिर स्वराज्य क्याचीज सामने इसीकरे वहींमिल जाय ॥
बकने का अब समय नहीं है कार्य्य क्षेत्र में कूदो आय ।
बिना कर्मके कार्य्यन होता करताबिन नहिं कार्य्य लखाय ॥
कर्त्ता के बिन कर्म किये से कार्य्य न होता बिना उपाय ।
याते कर्म करो निः स्वार्थ सब कर्तव्य समझ कर भाय ॥
अन्याय हटाना धर्म तुम्हारा गीता पढ़ो चित्त को लाय ।
जुल्मसहे अन्याय कोदेखे वहफिर मानुष क्यों कहलाय ॥
अधर्म रोकन के कारण हित प्राण पखेरू जांय उड़ाय ।
सच्ची मुक्ती उसको मिलती हमरा धर्म रहा समझाय ॥
आज़ादी है स्वर्ग बराबर बन्धन नर्क का है स्थान ।

कर्मों का फल ईश्वर देता यह वेदों ने किया बखान ॥
नर्क स्वर्ग आधीन तुम्हारे जैसा कर्म करोगे आय ।
वैसा फल सबको मिल जावे ईश्वर न्यायकारि कहलाय ॥
भारत के सब कष्ट मिटावो तुम्हरे कष्ट सभी मिटजांय ।
भूप धर्म की मचे देश में कारज सभी सिद्ध होजाय ॥
नशा कुकर्मों को सब छोड़ो वस्तु स्वदेशी लो अपनाय ।
भारत वासी सब मिल जावो कार्य्य क्षेत्र में कूदो आय ॥
अबला रण में कूदि पड़ी है बालक भी अब रहे ललकार ।
अबलों की अबला हो कायर जिनके जीवन का धिक्कार ॥
छप्पनलाख देश में साधू वो सकट में आवें काम ।
चौदी लाख रोज का खरचा जो गृहस्थों के पड़ता दाम ॥
बिनती सबको करना चहिये सब लगिजांय देश के काम ।
अगर न मानें बिनती तुम्हरी हरगिज दीजो नहीं छदाम ॥
आजादी या मौत ध्येय हो हर प्रकार कल्याण दिखाय ।
यां पर सब स्वराज्य को पावें मरने पर मुक्ती को पाय ॥
न्याय धर्म से हक हम लेंगे वली न रक्खेंगे अब भाय ।
इनके कारज सभी देख लिया प्रभुता पाय गये इतराय ॥
वेद कहें हो देशी राजा जो परजा सब लेय बनाय ।
प्रजा कुमेंठी को वह माने राज्य नियम पर प्रजा चलाय ॥
है स्वराज्य सब देशों कायम फिर हम क्यों ना पावें भाय ।
अंगरेज वलीपन छोड़ें हमपर संगति हमरी बैठें आय ॥
पिता समान जार्ज पञ्जुम हैं भाई सम उनके युवराज ।
इनसे द्रोह कबहूँ नहिं कीज्यो मालिक सब के वह महराज ॥

न्याय धर्म से हक सब लेजो जो परजा के हैं अख्तयार ।
शान्ती भंग होन नहिं पावे बिनती यही है बारम्बार ॥
कर्तव्य धर्मसे च्युत नहीं होना उसपर डटे रहो सबयार ।
है स्वराज्य नजदीक तुम्हारे इसको देना नहीं अब डार ॥
ग्राम २ में बनें कुमेटी घर २ मेम्बर बनो सिपाह ।
नरनारी बालक अरु बूढ़े सब इस कार्य्य में करो निगाह ॥
बस्तु बिदेशी दिलसे छोड़ो नशा कुकर्मी देव हटाय ।
घर २ चर्खे खूब चलाओ अपने कपड़े लेव बनाय ॥
पंचायत से झगड़े मेटो अपना धन सब लेहु बचाय ।
सब मिलकर के फाग मचाओ डूबत भारत लेव बचाय ॥
हम स्वराज्य अब लेके रहिहैं या दे हैं सब प्राण गंवाय ।
मर २ बाद २ भी जन्मे फिर भी करेंगे ऐही भाय ॥
हैं थोड़े अन्यायी हमपर इतनी मेंड़ न ताकत हार ।
वीर पुत्र हम भारतबासी कहां तक करेंगे अत्याचार ॥
अहिंसात्मक शाँतिमई है पंहला हमला सुनियो भाय ।
धर्म हमारा साथी जब है विजय में प्रभुजी करे सहाय ॥
मन बानीअरु कदम उठाना एकसां कार्य्य में पड़े दिखाय ।
मन बांछित फल ईश्वर देगा वेदों ने दी युक्ति बताय ॥
घार दुःख सब उठा चुके हैं अब प्रभु देहैं दुःख नशाय ।
दुखके बाद सुःख है मिलता कालचक्र का यही है न्याय ॥
राजा परजा हित के कारण सच्चो बात कहा समुझाय ।
खताकसूर माफ सब करना जहाँ बिगड़ा हो लेव बनाय ॥
जोकुछ विनय करनथा सबसेउसको कहिदियागाय सुनाय ।
ओ३म शांती करो अन्तमें भारत शाँति मयी दिखलाय ॥

भाइयो म० गांधी व देशके नेताओं व कांग्रेस का कहना है कि निम्न लिखित उपायों द्वारा स्वराज्य प्राप्ति करने का प्रयत्न करें।

१—भारत के प्रत्येक नरनारी बालक को चाहिये कि प्रतिदिवस ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना करे और इस युद्ध में विजय पाने की विनती करे।

२—ग्राम २ कांग्रेस कमेटियाँ बनाओ और प्रत्येक घर का मनुष्य कांग्रेस का मेम्बर और सत्याग्रही सिपाही बने।

३—घर घर में रहटे चरखे घिरिया निकली चला कर अपनी जरूरत के कपड़े बनवाले और देश का ६६ करोड़ रुपया विदेश जाने से बचावे और विदेशी कपड़ा खरीदना और पहिनना महा पाप समझे।

४—हर प्रकार के नशों को छोड़ कर देश का करोड़ों रुपया नष्ट न करो और मनुष्यों को नशा की बुरी आदतों से छुड़ाओ।

५—प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि अपने भाइयों की मदद करे और जो २ आज्ञा कांग्रेस दे उसका पालन करना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है।

६—मुकदमाबाजी की आदत को छोड़कर कोर्टफीस तलबाना नजराना वकीलों के मेहनताना व नाहक के हक

से रुपया बरबाद न करो अपने मुकदमात आपसी पञ्चायतों द्वारा तय करलो।

७—जहां तक हो सके विदेशी तथा खासकर इंगलैन्ड की चीजों का बाईकाट करो और स्वदेशी अपनाओ।

८—हर मनुष्य को चाहिये कि नौकरी करना महा पाप समझे चाहे सरकार की हो या किसी दूसरेकी हो स्वतन्त्रता का पेशा करके गुलामी करना छोड़ देवे क्यों कि आजादी स्वर्ग और बन्धन नर्क के बराबर है कांग्रेस के विरोधियोंको भी हम असहयोग करके ठीक रास्ता पर ला सकते हैं।

९—कांग्रेस के झन्डे में लालरंग हिन्दुओं व हरा रंग मुसल मानों और सफेद रंग ईसाई आदि का है इस लिये समस्त भारतिया व भारत हितैषियों का परम कर्तव्य है कि तन मन धन से कांग्रेस की मदद करें।

१०—अहिन्सात्मक शांतिमय स्वराज्य की लड़ाई में प्रण करो कि हम स्वराज्य लेकर रहेंगे और आवश्यकता पड़ने पर जान भी निछावर कर देंगे धर्म युद्ध में जीतने पर स्वराज्य और मरने पर स्वर्ग मिलेगा यह हमारे धर्मिक ग्रन्थों का कथन है।

निवेदक—मिट्ठनलाल अग्रवाल

राष्ट्रीय झंडा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला,
वीरों को हरषाने वाला, मातृ-भूमि का तन मन सारा । झंडा०

स्वतंत्रताके भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षण क्षणमें,
कांपे शत्रु देख कर मनमें, मिट जाये भय संकट सारा । झंडा०

इस झन्डेके नीचे निरभय, लें स्वराज्य हम अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा । झंडा०

आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ,
एकसाथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा । झंडा०

इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भलेही जावे,
विश्व विजय करके दिखलावे, तब होवे प्रणपूर्ण हमारा । झंडा०

प्रेमप्रिंटिंग प्रेस कानपुर में छपा ।